बढ़ते कदम

वर्ष-17
अंक-03
2018-19

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्र-व्यवहार

(क) केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

(ख) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर अवधारित करे;

(ग) क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिन्दी में होंगे;

(घ) क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'ग'में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

(ङ) क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

परन्तु जहां ऐसे पत्रादि--

(i) क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;

(ii) क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा;

परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—
—सुधांशु कुमार विश्वास — 3
भारतीय रेल के रोचक तथ्य—
— संतोष कुमार 4
कैसा हो भगवान...—
— विनोद कुमार त्रिपाठी 5
रंजना—-
— विकास कुमार अंशु 7
युवा शक्ति
— कैलाश चंद्र धारिया 10
भैया दूज —
— चंदन कुमार 11
पच्चीस हजार का चोर
— चन्द्रभान 12
मेमोरी कार्ड और ई-सिम
— इंद्र ज्योति राय 14
कोई नहीं
— चंदन कुमार 17
पर्यावरण जल जाएगा
—- प्रमोद कुमार 17
भूली की परीक्षा
—- उमेश कुमार मोदी 18
सफर जिंदगी का
— तनुजा कुमारी 18
चित्र विथिका—- 19
छाया चित्र 20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने है इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नही है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)
Email – rajbhasha.malda@gmail.com
Whatsup **7044575977///7319444518**

सूर्योपासना पर्व—छठ

सूर्य की शक्तियों के मुख्य स्त्रोत उनकी पत्नी ऊषा और प्रत्यूषा हैं। छठ में सूर्य के साथ-साथ दोनों शक्तियों की संयुक्त आराधना होती है। प्रात:काल में सूर्य की पहली किरण (ऊषा) और सायंकाल में सूर्य की अंतिम किरण (प्रत्यूषा) को अर्घ्य देकर दोनों का नमन किया जाता है।

चार दिनों का यह लोक आस्था का महापर्व भैयादूज के तीसरे दिन से आरम्भ होता है। पहले दिन सेन्धा नमक, घी से बना हुआ अरवा चावल और कद्दू की सब्जी प्रसाद के रूप में ली जाती है। अगले दिन से उपवास आरम्भ होता है। व्रति दिनभर अन्न-जल त्याग कर शाम में खीर बनाकर , पूजा करने के उपरान्त प्रसाद ग्रहण करते हैं, जिसे खरना कहते हैं। तीसरे दिन डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य यानी दूध अर्पण किया जाता है। पर्व के अंतिम दिन उगते हुए सूर्य को अर्घ्य चढ़ाते हैं। पूजा में पवित्रता और साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है।

मूलत: सूर्य षष्ठी व्रत होने के कारण इसे छठ कहा गया है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है। पहली बार चैत्र में और दूसरी बार कार्तिक में पारिवारिक सुख-समृद्धि तथा मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए यह पर्व मनाया जाता है।

छठ पर्व मूलतः सूर्य की आराधना का पर्व है, जिसे हिन्दू धर्म में विशेष स्थान प्राप्त है और यह भारत में सूर्योपासना के लिए प्रसिद्ध है । भारत में सूर्योपासना ऋग वैदिक काल से होती आ रही है।

सूर्य और इसकी उपासना की चर्चा विष्णु पुराण, भगवत पुराण, ब्रह्मा वैवर्त पुराण आदि में विस्तार से की गयी है। छठ व्रत के सम्बन्ध में प्रचलित एक कथा के अनुसार जब पांडव अपना सारा राजपाट जुए में हार गये, तब श्री कृष्ण द्वारा बताये जाने पर द्रौपदी ने छठ व्रत रखा तब उनकी मनोकामनाएँ पूरी हुईं और पांडवों को राजपाट वापस मिला।

लोक परम्परा के अनुसार सूर्यदेव और छठी मइया का सम्बन्ध भाई-बहन का है। छठ पर्व को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो षष्ठी तिथि अर्थात छठ को एक विशेष खगोलीय परिवर्तन होता है, इस समय सूर्य की पराबैगनी किरणें पृथ्वी की सतह पर सामान्य से अधिक मात्रा में एकत्र हो जाती हैं इस कारण इसके सम्भावित कुप्रभावों से मानव की यथासम्भव रक्षा करने के उद्देश्य से शायद इसे मनाया जाने लगा।

—सुधांशु कुमार विश्वास

नि:शुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
तनु चंद्रा मंडल रेल प्रबंधक	संजय कुमार भगत अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	सुधांशु कुमार विश्वास राजभाषा अधिकारी(प्र.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय कनिष्ठ अनुवादक	कैलाश चंद्र धारिया एवं जनार्दन प्रसाद

भारतीय रेल के रोचक तथ्य

रेल में सफर करना तो सभी को पसंद होता है, आपने भी कई बार रेल में सफर किया होगा। क्या आपको पता है भारतीय रेल दुनिया में सबसे ज्यादा नौकरी देने वाले उप्रक्रमों में से एक है। भारतीय रेलवे से जुड़े कुछ ऐसे रोचक तथ्य हैं जिनके बारे में शायद आपको पहले पता नहीं होगा—

1. भारतीय रेलवे की शुरुआत 16 अप्रैल 1853 को हुई थी और इसकी पहली सेवा मुंबई से शुरू की गई थी।
2. भारतीय रेलवे में सबसे ज्यादा कर्मचारी काम करते हैं।
3. भारतीय रेलवे दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा और एशिया का सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है।
4. भारतीय रेल में 66,000 किलोमीटर लंबे नेटवर्क पर हर दिन 11,000 ट्रेनें चलाई जाती है।
5. भारतीय रेलवे करीब 15 लाख लोगों रोजगार देता है।
6. भारत की सबसे धीमी गति से चलने वाली ट्रेन का नाम है मेटुपाल्यम ऊटी नीलगिरी पैसेंजर ट्रेन जो मात्र 10 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से चलती है।
7. हर दिन भारतीय रेल द्वारा तय की जाने वाली कुल दूरी चाँद की दूरी के करीब 3.5 गुना के बराबर है।
8. भारत में हर दिन लगभग 7000 के करीब पैसेंजर ट्रेन हैं।
9. विवेक एक्सप्रेस ट्रेन भारत की सबसे लम्बे रुट पर चलने वाली ट्रेन हैं जो डिब्रुगढ़ और कन्याकुमारी के बीच चलती है और कुल 4,286 किलोमीटर की दूरी 82 घंटे और 30 मिनट में तय करती है।
10. भारत की सबसे ज्यादा स्टॉप पर रुकने वाली ट्रेन है हावड़ा-अमृतसर एक्सप्रेस है जो 115 स्टॉप पर रूकती है।
11. फेयरी क्वीन स्टीम इंजन से चलने वाली सबसे पुरानी ट्रेन है, इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज है।
12. चेनाब ब्रिज दुनिया का सबसे ऊँचा रेल ब्रिज है जो जम्मू और कश्मीर में चेनाब नदी एक ऊपर बना है।
13. नई दिल्ली – भोपाल शताब्दी एक्सप्रेस सबसे तेज गति से दौड़ने वाली भारतीय ट्रेन है।
14. नागपुर और अजनी स्टेशन के बीच चलने वाली ट्रेन भारत की सबसे कम दूरी पर चलने वाली ट्रेन है जो मात्र 3 किलोमीटर का सफर तय करती है।
15. भारत का नवापुर एकमात्र ऐसा अनोखा रेलवे स्टेशन है जिसका आधा हिस्सा महाराष्ट्र में और आधा हिस्सा गुजरात में आता है।
16. भारतीय रेल में प्रतिदिन करीब 2 करोड़ लोग सफर करते हैं।
17. भारतीय रेलवे की वेबसाइट को हर 1 मिनट में करीब 12 लाख लोग विजिट करते हैं।

संकलन — **संतोष कुमार**

कैसा हो भगवान का भक्त

मानव अपने उद्धार और पतन का दायित्व स्वतः वहन करता है, अतः उसे कर्तव्य-कर्म को शास्त्रोचित ढंग से सम्पादित करते हुए केवल उत्कट अभिलाषा से परमात्मज्ञान प्राप्त कर जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेना चाहिये।

श्रीमद्भगवद्गीता सर्वोत्तम पुस्तक है क्योंकि यह कोई मानवीय पुस्तक नहीं अपितु स्वयं भगवान् की वाणी है। महाभारत के कुरुक्षेत्र युद्ध में श्री कृष्ण ने गीता का सन्देश अर्जुन को सुनाया था जिसे महाभारत के भीष्मपर्व के अन्तर्गत दिया गया है। इसमें कर्म योग, ज्ञानयोग, भक्ति योग, सान्ख्योग की बहुत सुन्दर ढंग से चर्चा हुई है। इसमें देह से अतीत आत्मा का निरूपण किया गया है। यह विश्व के उन चुनिन्दा ग्रंथों में से है जो ईश्वरीय माने जाते हैं। गीता की सबसे ख़ास बात यह है कि इसका अर्थ समझना अत्यंत सरल है परन्तु आशय समझना अत्यंत दुरूह है।

श्रीमद्भगवद्गीता की पृष्ठभूमि महाभारत का युद्ध है। जिस प्रकार एक सामान्य मनुष्य अपने जीवन की समस्याओं में उलझकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है और उसके पश्चात जीवन से पलायन करने का मन बना लेता है उसी प्रकार अर्जुन अपने सामने आने वाली समस्याओं से भयभीत होकर युद्ध से पलायन का निर्णय कर लेता है। अर्जुन की तरह ही हम सभी कभी-कभी अनिश्चय की स्थिति में या तो हताश हो जाते हैं या फिर अपनी समस्याओं से उद्विग्न होकर कर्तव्य विमुख हो जाते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता के बारहवें अध्याय में भक्तियोग की व्याख्या की गई है। इस अध्याय में भगवान कृष्ण ने बताया है कि कौन कौन से लोग मुझे प्रिय हैं अर्थात वह व्यक्ति जो ईश्वर की आराधना या साक्षात्कार करना चाहता है उसे क्या करना चाहिए और कैसे रहना चाहिए। इसको दूसरे शब्दों में कहे तो कह सकते है कि ईश्वर को जो प्रिय है उस व्यक्ति का रहन सहन और स्वभाव कैसा होना चाहिए। यहां हम गीता के एक श्लोक का वर्णन करना चाहते हैं—

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः॥ (17)

भावार्थ : जो मनुष्य न तो कभी हर्षित होता है, न ही कभी शोक करता है, न ही कभी पछताता है और न ही कामना करता है, जो शुभ और अशुभ सभी कर्म-फ़लों को मुझे अर्पित करता है ऐसी भक्ति में स्थित भक्त मुझे प्रिय होता है।

ईश्वर को कौन प्रिय है इसकी व्याख्या अध्याय 12 के 17 वें श्लोक में दी गई है। आगे अन्य श्लोकों में ऐसी व्याख्याएं हैं पर हम यहां इसके विषय में देखेंगे कि भगवान ने ऐसा क्यों कहा।

यो न हृष्यति का अर्थ है कि जो कभी हर्षित नहीं होता। लेकिन इससे तो विरोध मालूम होता है कि क्या मनुष्य को खुश नहीं रहना चाहिए। नहीं इसका अर्थ यह नहीं है कि आप खुश मत होइए। क्योंकि खुशी यदि आप के पास आती है तो दुःख भी आप के पास अवश्य आएगा। इसका कारण यह है कि जिस कारण से आप को खुशी मिल रही है वह कारण काल के प्रभाव से कुछ काल बाद समाप्त हो जाएगा और वह खुशी दुःख में परिणत हो जाएगी। उदाहरण के लिए मान लीजिए आप ने एक घर बनवाया आप को बहुत खुशी मिल रही है। आप उस घर को बड़े अच्छे ढंग से सज़ा कर रखना चाहते हैं पर आपके साथ रहने वालो को आपकी भावनाओं का कोई ख्याल नहीं है वैसी स्थिति में आप को उस घर से दुःख मिलना प्रारंभ हो जाएगा।

भगवान ने सिर्फ इसी लिए ऐसा कहा कि घर के निर्माण से खुश होने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह खुशी क्षणिक है और जो क्षणिक है उससे हर्षित न हो कर केवल समता में रहना चाहिए। यदि आप तटस्थ रहते हैं तो न तो खुशी आपको उद्वेलित करेगी न ही दुःख ही कोई उद्वेलन कर पाएगा।

मनुष्य में मुख्य चार विकार होते हैं – (1) राग, (2) द्वेष, (3) हर्ष और (4) शोक। सिद्ध भक्त में ये चारों ही विकार नहीं होते। उसका यह अनुभव होता है कि संसार का प्रतिक्षण वियोग हो रहा है और भगवान् से कभी वियोग होता ही नहीं। संसार के साथ कभी संयोग था नहीं, है नहीं। रहेगा नहीं और रह सकता भी नहीं। अतः 'संसार की कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है' – इस वास्तविकता का अनुभव कर लेने के बाद (जड़ता का कोई सम्बन्ध न रहने पर) भक्त का केवल भगवान् के साथ अपने नित्यसिद्ध सम्बन्ध का अनुभव अटलरूप से रहता है।

इस कारण उसका अन्तःकरण राग-द्वेषादि विकारों से सर्वथा मुक्त हो जाता है और भगवान् का साक्षात्कार होने पर ये विकार सर्वथा मिट जाते हैं। साधनावस्था में भी साधक ज्यों-ज्यों साधन में आगे बढ़ता है, त्यों-त्यों उसमें राग-द्वेषादि कम होते चले जाते हैं।

हर्ष और शोक -- दोनों राग-द्वेष के ही परिणाम हैं। जिसके प्रति राग होता है, उसके संयोग से और जिसके प्रति द्वेष होता है उसके वियोग से हर्ष होता है। इसके विपरीत जिसके प्रति राग होता है उसके वियोग या वियोग की आशंका से और जिसके प्रति द्वेष होता है उसके संयोग या संयोग की आशंका से शोक होता है। सिद्ध भक्त में राग-द्वेष का अत्यन्ताभाव होने से स्वतः एक साम्यावस्था निरन्तर रहती है। क्योंकि वह विकारों से सर्वथा रहित होता है।जैसे, रात्रि के समय अन्धकार में दीपक जलाने की कामना होती है दीपक जलाने से हर्ष होता है। दीपक बुझानेवाले के प्रति द्वेष या क्रोध होता है और पुनः दीपक कैसे जले, ऐसी चिन्ता होती है। रात्रि होने से ये चारों बातें होती हैं। परन्तु मध्याह्न का सूर्य तपता हो तो दीपक जलाने की कामना नहीं होती। दीपक जलाने से हर्ष नहीं होता। दीपक बुझानेवाले के प्रति द्वेष या क्रोध नहीं होता और प्रकाश के अभाव की चिन्ता भी नहीं होती।

इसी प्रकार भगवान् से विमुख और संसार के सम्मुख होने से शरीरनिर्वाह और सुख के लिये अनुकूल पदार्थ, परिस्थिति आदि के मिलने की कामना होती है। इनके मिलने पर हर्ष होता है और इनकी प्राप्ति में बाधा पहुँचानेवाले के प्रति द्वेष या क्रोध होता है तथा इनके न मिलने पर कैसे मिले ऐसी चिन्ता होती है। परन्तु जिसको दुपहरिया के सूर्य की तरह भगवत्प्राप्ति हो गयी है उसमें ये विकार कभी नहीं रहते। वह पूर्णकाम हो जाता है। अतः उसको संसार की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

'शुभाशुभपरित्यागी' – शुभ एवं अशुभ कर्मों में राग-द्वेष का त्याग। ममता, आसक्ति और फलेच्छा से रहित होकर ही शुभ कर्म करने के कारण भक्त के कर्म शास्त्र विहित कर्म-अकर्म- कर्म हीनता, विहित कर्म को न करना हो जाते हैं। इसलिये भक्त को शुभ कर्मों का भी त्यागी कहा गया है। राग-द्वेष का सर्वथा अभाव होने के कारण उससे अशुभ कर्म होते ही नहीं। अशुभ कर्मों के होने में कामना, ममता, आसक्ति ही उत्पन्न होती हैं परंतु भक्त में इनका सर्वथा अभाव होता है। इसलिये उसको अशुभ कर्मों का भी त्यागी कहा गया है।

'भक्तिमान्यः स मे प्रियः' – भक्त की भगवान् में अत्यधिक प्रियता रहती है। उसके द्वारा स्वतःस्वाभाविक भगवान् का चिन्तन, स्मरण, भजन होता रहता है। ऐसे भक्त को यहाँ भक्तिमान् कहा गया है।भक्त का भगवान् में अनन्य प्रेम होता है। इसलिये भगवान् कहते हैं कि ऐसा भक्त प्रिय होता है।

भगवान की भक्ति के लिए यह आवश्यक है कि भक्त समता में रहे वह संसार की किसी भी परिस्थिति में अपने को सुखी या दुःखी होने का अनुभव न करे। इसका कारण यह है कि संसार भगवान की लीला का अंश है और वह भगवान के द्वारा बनाया गया है। भगवान की लीला से प्रेम करने बजाए सीधे भगवान से ही प्रेम करना सर्वाधिक उचित है इसलिए भगवान के भक्तों में उक्त श्लोक में बताए गए गुण स्वतः ही अभिव्यक्त होने लगते हैं।

— विनोद कुमार त्रिपाठी

रंजना

रंजना कुछ खास सुंदर नहीं थी। फिर भी वह हर समय काफी प्रसन्न रहा करती थी। उसके विवाह के दो बरस बीत चुके थे। फिर भी उसका पति उसे खूब चाहता था । साथ ही वह खासा धनी भी था। जाड़े की शाम को रोजी अपने एक परिचित की दुकान पर पहुंची। दुकानदार उसका बहुत आदर करता था। रोजी को देखते ही उसने बक्से में रखी एक डिबिया निकाली।

डिबिया चांदी की थी। देखने में काफी खूबसूरत थी। रोजी का दिल उसे ले लेने के लिए मचल उठा। उसने दुकानदार से पूछा-"इसकी कीमत कितनी है?"

"कुछ खास नहीं।"

"फिर भी दाम तो बताइए।"

"आपके लिए दाम की क्या बात है जी? पैसे तो मैं ले ही लूंगा। मैंने तो इसे बस आप ही के लिए रखा है।"

"नहीं, जब तक आप इसकी कीमत नहीं बताएंगे, मैं इसे नहीं ले जा सकती।"

"इसकी खूबसूरती और कारीगरी को तो जरा देखिए मैडम! आपके लिए बस खरीदे गए दाम पर ही दे दूंगा। आप हमें सिर्फ बारह हजार रुपए दे दीजिए।"

"बाप रे, इतने रुपये! तब तो मैं इसे नहीं ले सकती।" रोजी अमीर थी, लेकिन वह इतने रुपये हीरों से बने कानों के टॉप्स के लिए खर्च नहीं करना चाहती थी। लेकिन उसकी डिबिया और उसके भीतर के टॉप्स को छोड़ कर जाने का मन भी नहीं कर रहा था।

उसने अपनी साड़ी का पल्लू सम्हाला और सोचने लगी, काश! मैं इसे खरीद पाती!

रोजी की मोटरकार सामने खड़ी थी। वह कुछ पग चलकर उसमें बैठ सकती थी, मगर वह वहीं खड़ी रही। मनुष्य के जीवन में कुछ क्षण ऐसे भी आते हैं, जब वह चैन के जीवन को छोड़ कर बाहर की भयंकर परिस्थितियों का सामना करने लगता है। वह सोच में पड़ जाता है कि उसे क्या करना चाहिए। ऐसी कुछ स्थिति रंजना की हो रही थी। वह यह निर्णय नहीं कर पा रही थी कि उसे इन टॉप्स को लेना चाहिए कि नहीं।

तभी उसकी दृष्टि दुबली-पतली और काले बालों वाली एक लड़की पर पड़ी। मालूम नहीं, वह कहां से आई थी* उसने रंजना के बिल्कुल निकट आकर कहा-"बीबीजी, क्या मैं आपसे एक निवेदन कर सकती हूं?"

रंजना ने उसकी ओर ध्यानपूर्वक देख कर पूछा-"मुझसे कुछ कहना चाहती हो?"

लड़की के कपड़े फटे-पुराने थे। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं। वह एकदम नवयुवती थी। उसकी आयु रंजना से कम ही लगती थी। पर वह शीत से ऐसे कांप रही थी, जैसे अभी-अभी पानी से निकल कर आई हो। उसने रुकते-रुकते कहा-"बीबीजी, क्या आप मुझे एक कप चाय के पैसे दे सकती हैं?"

एक कप चाय के पैसे! उसके शब्दों में सादगी और सच्चाई थी। ये किसी भिखारिन के शब्द नहीं थे। रंजना ने उससे पूछा- "क्या तुम्हारे पास कुछ भी पैसे नहीं हैं?" उसने नकारात्मक उत्तर दिया।

"कितने आश्चर्य की बात है?"कहते हुए रंजना ने धुंध के अंधकार में उस लड़की के चेहरे की ओर देखा। लड़की ने भी उस पर दृष्टि डाली। तभी रंजना के मन में यह विचार आया कि अगर मैं उसको घर पर ले जाऊं और इससे इस प्रकार का कोई काम कराऊं जो इसके लिए सुख दे सके तो कितना अच्छा होगा। यह सोच कर उसने कहा- "चलो, मेरे साथ। मैं तुम्हें अपने घर पर ले जाकर चाय पिलाऊंगी।"

लड़की ने घबराकर पूछा-"आप मुझसे मजाक तो नहीं कर रही हैं?"

"नहीं, मैं मजाक नहीं करती। आओ, मेरे साथ चलो।"

लड़की ने अपना हाथ अपने मुंह पर रख लिया। भय से उसकी आंखें खुल कर बहुत बड़ी हो गईं। अंत में उसने डरते-डरते रंजना से कहा-"आप मुझे पुलिस के हवाले तो नहीं करना चाहतीं?" रंजना ने हंस कर कहा-"नहीं, मैं इतनी कठोर नहीं हूं। मैं तुम्हें आराम पहुंचाना चाहती हूं और तुम्हारे लिए कोई काम तलाश देना चाहती हूं।"

रंजना टॉप्स खरीदना छोड़ कर उस लड़की को लेकर मोटर में आ बैठी। ड्राइवर को घर चलने का आदेश दिया। उसने गाड़ी स्टार्ट की और वह सड़क पर उसके घर की तरफ भागने लगी।

रंजना के हृदय में दया और उपकार की भावनाएं उमड़े जा रही थीं। पर वह उस लड़की पर यह प्रकट नहीं करना चाहती थी। कुछ सोच कर उसने लड़की के चेहरे की ओर देख कर कहा -"तुम बिल्कुल मत डरो। तुमको हमारे साथ रहने में कोई भय की बात नहीं है! एक ही घर में हम दोनों बहनों की तरह भी तो रह सकती हैं। हम तुम्हें किसी नौकरानी की तरह नहीं रखेंगे। मेरी कोई बहन नहीं है, तुम्हें पाकर ऐसा लगा कि मेरी बहन मुझे मिल गई है।"

घर आ गया था। रंजना ने बड़ी सावधानी से लड़की को अपनी बाहों में लेकर मकान में प्रवेश किया। कमरे की गरमी, प्रकाश, सुगंध और शोभा उस लड़की के लिए निराली वस्तुएं थीं। रंजना बड़े ध्यान से उसके चेहरे का अध्ययन कर रही थी।

रंजना ने कहा-"चलो ऊपर। मेरे कमरे में चलो।" वह उस गरीब लड़की को किसी नौकर की भांति नहीं, अपनी बहन की तरह रखना चाहती थी। इसीलिए उसने ऊपर पहुंचते ही अपने कपड़े देकर उसे पहनने के लिए कहा।

रंजना की शौक की कई प्राचीन कलाकृतियां कमरे में चमक रही थीं। लड़की आंखें फाड़े उसे देख रही थी। ऐसा लगता था कि उस लड़की की आंखें कुछ कहना चाह रही हैं। परंतु रंजना ने उस पर विशेष ध्यान नहीं दिया। वह कुर्सी पर स्वयं बैठते हुए लड़की से बोली-"आओ, यहां बैठ जाओ। तुम्हें बहुत ठंड लग रही है ना?"

लड़की पीछे हट गई और बोली-"बीबीजी, मैं इतना साहस नहीं कर सकती।"

रंजना ने आगे बढ़ कर उसकी बाहों को पकड़ लिया और कहा-"तुम बहुत झिझक रही हो। अभी तुम्हें हमने अ पनी बहन कहा है। इसलिए तुम्हें डरने की कोई बात नहीं है। मामूली-सी बात है। जरा खुल कर सांस लो। फिर हम आराम से चाय पिएंगे। डरो मत।" यह कह कर उसने स्वयं उसे कुर्सी पर बिठा दिया।

लड़की बिलकुल मौन बैठी थी। जिस प्रकार रंजना ने उसे कुर्सी पर बिठाया था, वह उसी प्रकार बिना हिले-डुले बैठी रही। वह इतनी देर हो जाने के बाद भी अपने को संयत नहीं कर पा रही थी।

" तुम्हारे इतने सुंदर बाल अभी भी भींगे हुए हैं। तुम इन्हें तौलिया से पोंछ कर सुखा लो?"

"बहुत अच्छा बीबीजी!"

उस लड़की के खुले बाल बहुत लंबे थे। चेहरे से दामिनी चमक रही थी। पर धीरे-धीरे उस पर नशा सा छाता जा रहा था। उसने बड़े धीरे से कहा-"बीबीजी, मैं क्षमा चाहती हूं। मैं एक क्षण में मूर्च्छित हो जाऊंगी। अगर मुझे खाने को कुछ न दिया गया तो, शायद मेरी जान ही निकल जाए।"

रंजना चौंक कर बोली-"ओह! मैं कितनी लापरवाह हूं। मुझे ध्यान ही न रहा।" इसके बाद उसने नौकरानी को कहा-" झटपट चाय लेकर आओ।" चाय पहुंचने में थोड़ी देर हो रही थी तो उसने रंजना के पास घुटने टेककर अ पना सर उसके घुटनों पर रख दिया। रंजना उसे सांत्वना देने लगी-"मत रो बच्ची!" फिर उसने अपना रेशमी रूमाल निकाल कर उसे दिया, और फिर अपनी बाहें उसके दुबले-पतले कंधों के गिर्द डाल दीं।

अब लड़की लज्जा छोड़ सिसकियां भरकर रोने लगी -"मैं यह दुर्दिन और विपदा सहन नहीं कर सकती। अब मुझ में साहस नहीं रहा। मैं अपने-आप को समाप्त कर दूंगी।"

रंजना ने धीरज बंधाते हुए कहा-"अब तुम्हारे बुरे दिन चले गए हैं। अब मैं हर प्रकार से तुम्हारा ध्यान रखूंगी। हम अभी चाय पिएंगे। फिर मुझे अपनी कहानी सुनाना। मैं तुम्हारे लिए अवश्य कुछ-न-कुछ प्रबंध कर दूंगी। रोना बंद कर दो। इससे बहुत कमजोरी हो जाती है। भगवान के लिए चुप हो जाओ"

उसने रोना बंद कर दिया। रंजना उठने ही वाली थी कि नौकरानी चाय लेकर आ गई। रंजना सावधानी से प्रत्येक वस्तु...मक्खन, टोस्ट, केक आदि उसे देती रही। जितनी बार उसकी प्याली चाय से खाली हुई, उसे वह चाय, चीनी और दूध से भरती रही। उसने स्वयं कुछ न खाया, बल्कि दूसरी ओर बैठी वह सिगरेट के कश लगाती रही कि कहीं लड़की लज्जा से अपना हाथ न रोक दे। इस थोड़े-से खाने-पीने का तत्काल प्रभाव हुआ। जब चाय की प्याली उठाई गई तो कुर्सी पर एक नई-नवेली, हल्की-फुल्की, घुंघरूदार बालों एवं गुलाबी होठों वाली लड़की तृप्त होकर निर्भय बैठी थी।

उसी समय द्वार खुला और एक आवाज आई-"रंजना!" यह आवाज रंजना के पति की थी।

"आइए!" अंदर आते हुए वह लड़की को देख कर रुक गये और बोले-"मैंने तुम लोगों को कष्ट दिया।" रंजना ने मुस्कराकर कहा-"कोई बात नहीं। यह है मेरी सहेली ..." "सुधा!" लड़की ने बिना झिझके अपना नाम बता कर रंजना का वाक्य पूरा कर दिया। रंजना ने आगे कहा-"मैं आपसे संक्षेप में बात करना चाहती हूं।"

"अवश्य!" परेश बोला। वह आग की ओर पीठ करके खड़ा हो गया और बोला-"कितनी ठंड है!" जब उसकी दृष्टि लड़की के चेहरे पर पड़ी तो उसने अपनी नजरें हटा कर पत्नी की ओर देखा।

रंजना ने कहा-"आज की शाम वास्तव में बहुत ठंडक है। क्यों, है ना?"

परेश के चेहरे पर एक मनमोहक मुस्कुराहट दौड़ गई। फिर वह कहने लगा-"रंजना, क्या एक क्षण के लिए मेरे पास आ सकती हो? सुधा जी, क्षमा कीजिएगा।"

लड़की ने बड़ी-बड़ी आंखों से परेश की ओर देखा। एकांत में पहुंचकर परेश बोला-"मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है। बात क्या है? यह लड़की कौन है ? मुझे भी कुछ समझाओ!" रंजना ने मुस्कुराते हुए कहा-"यह मुझे शिवाजी सड़क पर मिली थी। देखो, कितनी अच्छी लड़की है ! उसने मुझसे एक कप चाय पीने के पैसे मांगे थे। मैं उसे अपने साथ ले आई हूं।" परेश ने चकित होकर कहा-"मगर तुम उससे चाहती क्या हो?"

रंजना ने कहा-"मैं उसे अपने पास रखूंगी। पर मेरी प्रार्थना है कि तुम उससे इस प्रकार का बर्ताव करना कि उसे दु:ख न हो।" परेश ने संदेह प्रकट करते हुए कहा, "प्रिये, मुझे तो यह अजीब-सा लगता है। यह कैसे संभव हो सकता है?" रंजना ने कहा-"मुझे पहले ही मालूम था कि तुम ऐसा ही कहोगे! किंतु यह अवश्य संभव हो सकता है। यह मेरी तीव्र इच्छा है कि यह मेरे साथ ही रहे। मैं निश्चय कर चुकी हूं...।"

परेश ने धीरे से कहा-"परंतु...।" फिर वह सिगरेट सुलगाते हुए बोला-"एक बात है। यह लड़की है बड़ी खूबसूरत! आह, कितनी सुंदर है यह!"

रंजना बोली, "सुन्दर? यह तुम्हारा ख्याल है? मैंने तो यह नहीं सोचा था।"

परेश ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा-"हे भगवान! इसका शरीर कितना प्यारा लगता है। लगता है, किसी परी ने स्वर्ग से धरती पर कदम रखा हो। जब मैंने तुम्हारे कमरे में प्रवेश किया तो उसे देख कर चकित रह गया। सचमुच इतनी सुंदर औरत मैंने अब तक नहीं देखी है।"

रंजना वहां से निकल आई। मगर वह सुधा के पास न जाकर अपने शयन-कक्ष में जाकर सेफ की तरफ बढ़ने लगी। उसके मस्तिष्क में परेश के कहे वाक्य घूम रहे थे सुंदर... कितनी प्यारी। मैंने इतनी सुंदर ...। वह सोच में पड़ गई। उसका हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था। सुंदर...कितनी प्यारी... फिर उसने पांच सौ के दो नोट निकाले। नोट हाथ में लेकर वह अपने शयन-कक्ष की ओर मुड़ गई।

थोड़ी देर के बाद वह फिर परेश के पास आई। परेश अभी तक समाचार-पत्र पढ़ रहा था। उसने अपने पति से कहा-"मैं तुम्हें केवल यह बताना चाहती थी कि तुम्हारी प्यारी सुधाजी रात का खाना अब हमारे साथ न खा सकेंगी। वह चली गई हैं।"

परेश ने समाचार-पत्र रख कर कहा-"अच्छा...क्यों, क्या पहले से ही उनका कार्यक्रम निश्चित था?" रंजना परेश के घुटनों पर बैठ कर बोली-"वह जाने के लिए हठ कर रही थी, इसलिए मैंने उसे कुछ नकद रुपये दे दिए हैं। मैं उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध नहीं रोकना चाहती थी। तुम्हीं बताओ, क्या यह उचित नहीं था?"

रंजना ने आज अपने को बड़ी मेहनत और सावधानी से सजाया था। रात को बिस्तर पर उसने धीमी और मीठी भाषा में पूछा-"क्या मैं तुम्हें पसंद हूं?" "क्यों, क्या मैं तुम्हें प्यार नहीं करता?" यह कह कर परेश ने उसे अपने आलिंगन में बांध लिया।

"मुझे और प्यार करो !" रंजना ने कहा। एक क्षण तक मौन छाया रहा। परेश ने धीमे से पूछा-"लेकिन तुमने ऐसा क्यों पूछा कि क्या मैं सुंदर हूं?"

रंजना ने इसका कोई जवाब नहीं दिया बल्कि परेश के सीने में अपना सर छुपा लिया।

— विकास कुमार *अंशु*

युवा शक्ति

आज समाज एवं देश को युवाओं से बहुत अपेक्षा है। युवा ही समाज एवं देश का उज्जवल भविष्य हैं। क्या आज युवा अपने कर्तव्य एवं अधिकार को ठीक से समझता है ? क्या आज का युवा भ्रमित होकर अपने लक्ष्य से भटक तो नहीं रहा है ? क्या युवा अपनी उर्जा एवं क्षमता का उचित प्रयोग कर पा रहा है ? क्या युवा अपनी सोच को किसी विचारधारा में बंद कर समाज एवं देश को पतन की ओर तो नहीं ले जा रहा है ? क्या युवा अपने समाज एवं देश की सेवा निस्वार्थ भाव से करना चाहता है ? क्या युवा में त्याग की भावना है या फिर वह अपने निम्न विचारों में खो गया है ? आखिर कैसे बनाएगा देश एवं समाज को महान — आज का युवा।

यदि हम एक नजर आज के नवयुवकों की गतिविधियों पर डाले तो पाते हैं कि युवा अपना अधिकतम समय मोबाइल पर व्यतीत करता हुआ दिखाई देता है। मोबाइल ने आज के युवा का अधिकतम समय खा लिया है। आज विद्यार्थी अपना अध्ययन ठीक से नहीं कर रहा है। जो कार्य उसे समय पर करना चाहिए उससे वह विमुख होता जा रहा है। माता-पिता एवं शिक्षकों की प्रताड़ना सुनता है। परिवार एवं अपने विद्यालय के परिसर में अशांति फैला रहा है। यह भी देखा जा रहा है कि आज की युवा पीढ़ी नशे की गिरफ्त में फंसती जा रही है। माता पिता उनसे कुछ बोलते हैं तो वह उनसे झगड़ा करने लगते हैं। कुछ नवयुवक तो छोटी सी इच्छा पूरी नहीं होने पर माता-पिता को आत्महत्या करने की धमकी तक दे डालते हैं।

जब नवयुवक महाविद्यालय की दहलीज पर अपना पहला कदम रखता है तो उसमें अहंकार एवं सर्वश्रेष्ठ बनने की आदत बन जाती है। मगर नवयुवक को उन महान समाजसेवी एवं कर्तव्य परायण महान पुरुषों का स्मरण करते हुए अपना आदर्श बनाना चाहिए जिन्होंने समाज एवं देश के नवनिर्माण में अपना जीवन व्यतीत कर दिया था। आज के नव युगों की सोच एवं विचारधारा विश्व स्तर की होनी चाहिए। उनकी सोच वैज्ञानिक एवं कार्यात्मक होनी चाहिए। जब युवा वैज्ञानिक एवं कार्यात्मक सोच रखेगा तब उसके अंदर सहिष्णुता एवं परोपकार की भावना विकसित होगी। वह त्याग करने में समर्थ होगा। जब हम अपनी थोड़ी सी आजादी का त्याग कर दूसरों की आजादी का ध्यान रखेंगे तब समाज एवं देश में खुशहाली एवं शांति स्थापित हो सकेगी।

यह बहुत ही शर्म की बात है कि आज का युवा सिर्फ अपने अधिकार को माता-पिता, समाज एवं देश के ऊपर मानता है। वह अपने कर्तव्य का पालन ईमानदारी से नहीं करता है। आज आज का युवा संकीर्ण राजनीति करने वाले राजनीतिक दलों के चंगुल में फंसा हुआ दिखाई पड़ता है। आजादी के 71 वर्ष बाद भी हम जातिवाद क्षेत्रवाद एवं भाषा जैसे पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं।

एक शक्तिशाली एवं गौरवपूर्ण भारत का निर्माण करने के लिए कमजोर एवं लाचार भूमिहीन बेरोजगार परिवारों के विषय में गंभीरता पूर्वक विचार करना होगा। कोई भी देश सही मायने में प्रगतिशील नहीं बन सकता है जब तक कि उस देश में कुछ लोग भूख एवं बीमारी से मर जाते हो। क्या युवा पीढ़ी त्याग एवं बलिदान के विषय में सोचती है। किस प्रकार का त्याग करते हैं उनकी दशा एवं दिशा को कौन निर्धारित करता है। यदि आज का नवयुवक अपने मन में प्रण कर ले कि वह क्षुद्र विचारधारा से प्रभावित नहीं होकर सार्वभौमिक विचारधारा से जुड़ेगा जिससे उसे भयभीत न होना पड़े, स्वतंत्र रह कर कार्यात्मक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर एक दूसरे के साथ चल सकेगा। एक ऐसी विचारधारा जो सभी नागरिकों के चेहरे को मुस्कुराते हुए देखना चाहती हो।

अब प्रश्न उठता कि यह कौन तय करेगा कि कौन सी विचारधारा अच्छी है और कौन सी विचारधारा गलत है। इसके लिए हमको हमारे महापुरुषों के आदर्शो एवं मूल्यों पर गौर से ध्यान देना होगा। — **कैलाश चंद्र धारिया**

भैया दूज

भाई बहन के स्नेह को सुदृढ़ करता है **भैया दूज** का त्यौहार। यह त्यौहार दीवाली के दो दिन बाद मनाया जाता है। हिन्दू धर्म में भाई-बहन के स्नेह-प्रतीक से संबंधित दो त्यौहार मनाये जाते हैं - एक रक्षाबंधन जो श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसमें भाई बहन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करता है। दूसरा त्यौहार, 'भाई दूज' का होता है। इसमें बहनें भाई की लम्बी आयु की प्रार्थना करती हैं। भाई दूज का त्यौहार कार्तिक मास की द्वितीया को मनाया जाता है।

भैया दूज को भ्रातृ द्वितीया भी कहते हैं। इस पर्व के मूल उदेश्य भाई तथा बहन के पावन संबंध व प्रेमभाव की स्थापना है। इस दिन बहनें बेरी पूजन भी करती हैं और भाइयों के स्वस्थ तथा दीर्घायु होने की मंगल कामना करके तिलक लगाती हैं। भारत के कुछ जनपदों में इस दिन बहनें भाइयों को तेल मलकर गंगा यमुना में स्नान भी कराती हैं।

ऐसी मान्यता है कि यदि बहन अपने हाथ से भाई को खाना खिलाए तो भाई की उम्र बढ़ती है और जीवन के कष्ट दूर होते हैं। परंपरा के अनुसार इस दिन बहनें भाइयों को चावल से बना हुआ पकवान या मीठा खिलाती है। इस दिन बहन के घर भोजन करने का विशेष महत्व है। यदि कोई बहन न हो तो गाय, नदी आदि स्त्रीत्व पदार्थ का ध्यान करके अथवा उसके समीप बैठ कर भोजन कर लेना भी शुभ माना जाता है।

कुछ उत्तर भारतीय राज्यों में इस दिन गोधन कूटने की प्रथा भी है। गोबर की मानव मूर्ति बना कर छाती पर ईंट रखकर स्त्रियां उसे मूसलों से तोड़ती हैं। बहन भाई का यह पर्व सभी प्रसन्नता से मनाते हैं। इस दिन यमराज तथा यमुना जी के पूजन का विशेष महत्व है।

पौराणिक कथानुसार भगवान सूर्य नारायण की पत्नी का नाम छाया था। उनकी कोख से यमराज तथा यमुना का जन्म हुआ था। यमुना यमराज से बड़ा स्नेह करती थी। वह यमराज से बराबर निवेदन करती कि वह अपने इष्ट मित्रों सहित उसके घर आकर भोजन करे। अपने कार्य में व्यस्त यमराज हर बार बात को टाल जाया करता था। कार्तिक शुक्ल की तिथि का शुभ मूहूर्त आया। यमुना ने उस दिन फिर यमराज को भोजन के लिए निमंत्रण देकर, उसे अपने घर आने के लिए वचनबद्ध कर लिया।

यमराज ने सोचा कि मैं तो प्राणों को हरने वाला हूं। मुझे कोई भी अपने घर नहीं बुलाना चाहता। बहन जिस सद्भावना से मुझे बुला रही है, उसका पालन करना मेरा धर्म है। बहन के घर आते समय यमराज ने नरक निवास करने वाले जीवों को मुक्त कर दिया। यमराज को अपने घर आया देखकर यमुना की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने स्नान कर पूजन करके छपन्न व्यंजन परोसकर अपने भाई को भोजन कराया। यमुना द्वारा किए गए आतिथ्य से यमराज ने प्रसन्न होकर बहन को वर मांगने का आदेश दिया।

यमुना ने कहा कि भ्रात आप प्रति वर्ष इसी दिन मेरे घर आया करें। मेरी तरह जो बहनें इस दिन अपने भाई को आदर सत्कार करके टीका करे, उसे तुम्हारा भय न रहे। यमराज ने तथास्तु कहकर यमुना को अमूल्य वस्त्राभूषण देकर यमलोक की राह पकड़ी। इसी दिन से इस पर्व को मनाने की परम्परा बनी। ऐसी मान्यता है कि जो आतिथ्य स्वीकार करते हैं, उन्हें यम का भय नहीं रहता। इसीलिए भैयादूज को यमराज तथा यमुना का पूजन किया जाता है।

—चंदन कुमार

पच्चीस हजार का चोर

बल करण नामक एक व्यापारी चेन्नई तमिल नाडु में सोने चांदी आदि ज्वेलरी का व्यापार करता था. उसके कुछ मित्र सऊदी अरब में रहते थे. मित्रों से बातचीत के दौरान बलकरण को ज्ञात हुआ कि यदि वह अपना रोजगार सऊदी अरब में कुछ दिन करने में सफल हो गया तो उसकी आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत हो जाएगी. अर्थात जितना परिश्रम वह चेन्नई में कर रहा है उसी परिश्रम में ही सऊदी अरब में 10 गुने से भी ज्यादा की कमाई कर लेगा.

यह बात सुनने के बाद बलकरण व्यापारी के रातों की नींद उड़ गई तथा वह रातों रात अमीर बनने का सपना देखने लगा. उसका वीजा बन गया और वह सऊदी जाने में सफल हो गया. सऊदी अरब पहुंचकर बलकरण व्यापारी पूरा मन लगाकर व्यापार करने लगा. उसे सोने चांदी एवं ज्वेलरी के काम में अत्यधिक अनुभव एवं महारत हासिल थी. अतः दिन दूनी रात चौगुनी उसको सफलता मिलती गई.

वह रोज रात 12:00 बजे तक दुकान पर काम करता रहता. सुबह 4:00 बजे उठकर नित्य कर्म से निपटने के बाद 1 घंटे तक महावीर हनुमान जी की पूजा करता. इस प्रकार वह एक बार सऊदी अरब पहुंचने के बाद लगातार पांच बरस रहकर कठोर मेहनत करके बहुत सारा धन कमाया. 5 वर्ष के बाद उसने अपने देश भारतवर्ष आने की बात सोची.

उसने अपने दूसरे दोस्तों के साथ मिलकर समुद्र मार्ग का चुनाव किया. बलकरण व्यापारी बहुत सारा सामान सोना, चाँदी, हीरा, मोती, जेवरात आदि लेकर समुद्री जहाज में सवार हो गया. समुद्री जहाज चलते हुए भारतवर्ष की सीमा में प्रवेश करने लगा.

तभी अचानक आकाश में अंधेरा छा गया एवं तेज बारिश एवं तेज रफ्तार से हवाएं चलने लगी. समुद्री जहाज का चालक खतरे की घंटी बजा कर सबको सावधान कर दिया कि आप लोग अपनी अपनी जगह पर चुपचाप बैठ जाइए एवं अपने अपने इष्टदेव, भगवान, अल्लाह जिसका जो देवता हो उसका ध्यान कीजिए. इसके कुछ समय पहले ही हुद हुद नामक चक्रवात तूफान आया था और वह बहुत अधिक जनधन का नुकसान कर चुका है.

समुद्री जहाज में सवार सभी यात्री अत्यंत भयभीत हो गए एवं अपना अंत निकट देखकर जिससे जो बना वह अपने अपने इष्ट, देवी, देवता, भगवान, अल्लाह, ईश्वर की पूजा अर्चना करने लगा. वह व्यापारी भी हनुमान जी की मनौती माना कि हनुमानजी यदि मैं सही सलामत इस तूफान से बचकर अपने घर परिवार में पहुंच गया तो आपको सवा लाख रुपए का लड्डू चढ़ाउंगा.

बलकरण व्यापारी मनौती मानने के बाद आश्वस्त हो गया था कि हनुमान जी को लड्डू बहुत पसंद है इसलिए सवा लाख रुपए का लड्डू का प्रस्ताव हनुमान जी कभी ठुकरा नहीं सकते. अर्थात वह हमारी रक्षा अवश्य करेंगे. यहां पर यह उक्ति चरितार्थ हो रही है कि

जिसकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत तिन देखी तैसी.

बल कर्ण महावीर हनुमान जी का निसंदेह एक अनन्य भक्त था लेकिन वह पेशे से एक व्यापारी था. अतः उसने यह मान लिया कि हनुमानजी भी एक व्यापारी ही तो है। तभी आसमान से धीरे-धीरे काले घनघोर बादल छंटने लगे। और प्रकाश की किरणें देखने लगी. अब बलकरण व्यापारी के मन में यह बात जन्म लेने लगी कि खतरा धीरे धीरे टल रहा है तो क्यों ना हम सवा लाख रूपये लड्डू की जगह एक लाख का लड्डू ही चढ़ाएं. क्योंकि हनुमान जी तो लड्डू की महक ही तो लेते हैं वह लड्डू खाते तो हैं नहीं इसलिए ज्यादा पैसा खर्च करना समझदारी नहीं हो सकती.

समुद्री जहाज के चालक ने घोषणा की कि खतरा लगभग 50% कम हो गया है. ऐसा जानकर बलकरण व्यापारी ने मन में सोचा कि यदि खतरा 50% कम हो गया है तो हनुमानजी को मेहनत भी तो कम ही करनी पड़ेगी इसलिए मजदूरी

भी तो आधी ही होनी चाहिए इसलिए पचास हजार का भी लड्डू चढ़ाकर हनुमान जी को प्रसन्न किया जा सकता है. अब खतरे की घंटी बजना बंद हो गई और समुद्री जहाज के चालक ने घोषणा कर दी कि जहाज में बैठे सभी यात्री सुरक्षित हो गए हैं और शीघ्र ही हम लोग अपने गंतव्य स्थान चेन्नई के समुद्र तट पर पहुंचने वाले हैं. अब बलकरण ने सोचा कि जब हम लोग सुरक्षित हो ही गए हैं तो हनुमान जी को अब कोई मेहनत करने की जरूरत तो है नहीं इसलिए मेहनताना भी सवा लाख रूपय लड्डू की जगह सवा सौ रुपए के लड्डू चढ़ाने में कोई अपराध नहीं हो सकता.

खैर वह जहाज से उतर कर अपने गांव में पहुंचा तो देखा कि हनुमान जी के मंदिर में राम कथा चल रही है. उसने कथा आयोजकों से मिलकर कहा कि हमारी मनौती राम कथा कराने की है अतः आपसे गुजारिश है कि आप लोग एक लाख रुपए ले लीजिए और इस राम कथा का आयोजक हमें बना दीजिए। इस तरह बलकरण एवं राम कथा आयोजकों के बीच समझौता हो गया.

बलकरण व्यापारी सोचने लगा कि 25000 तो हनुमान जी से ठग लिया है अर्थात सवा लाख रुपए खर्च करने की जगह एक लाख में ही राम कथा खरीद ली है। दूसरे रामकथा के उपरांत जो चढ़ावा जनता के द्वारा चढ़ेगा उस पर भी हमारा ही अधिकार होगा. तीसरा फायदा यह कि महावीर हनुमान जी की मनौती भी पूरी हो जाएगी.

बलकरण व्यापारी लड्डू लेकर जब हनुमान जी के मंदिर पहुंचा तो देखा कि बगल में पुरुषोत्तम भगवान राम की मूर्ति भी हनुमान जी की मूर्ति के पास बनी है. उसने पहले फूल माला भगवान राम के गले में पहनाया तथा लड्डू चढ़ाया.

उसके बाद हनुमान जी के गले में फूल माला पहनाया. जैसे ही बलकरण व्यापारी का हाथ हनुमान जी के मूर्ति से स्पर्श किया वैसे ही उसका हाथ हनुमान जी के मूर्ति से चिपक गया. लाख कोशिश करने के बाद भी उसका हाथ मूर्ति का संपर्क अलग नहीं हो पा रहा था।यह तमाशा देखकर मुनीमजी आश्चर्यचकित हो गए और डरकर मंदिर से बाहर भाग खड़े हुए.

इस प्रकार हनुमान भक्त की दशा देख कर भगवान राम की भी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि यह आखिर क्या हो रहा है. जब भगवान राम से नहीं रहा गया तो आखिरकार हनुमान जी से पूछ ही लिया कि यह तुम्हारा कैसा चमत्कार है .

तब हनुमान जी बोले हे भगवन या 25000 का चोर पकड़ा गया है. तब राम जी बोले इस वक्त तो इसने हमारी पूजा अर्चना की है इसलिए इसके जमानत का उपाय बताइए.

हनुमान जी बोले जब इस वक्त इसकी वकालत आप स्वयं कर रहे हैं तो 25000 का मुचलका भरने के बाद जमानत मिल जाएगी. राम एवं हनुमान के बीच हो रहे संवाद बलकरण व्यापारी एवं उसके मुनीम दोनों ने सुन ली. बलकरण व्यापारी ने मुनिम जी को आदेश दिया कि 25000 पूर्व कथा आयोजकों को और दिए जाएं तथा राम कथा के उपरांत जो चढ़ावा चढ़ेगा उसे कथा वाचक महात्मा जी को दे दिया जाए . हमें इस कथा से लाभ नहीं चाहिए.

मुनीम ने अपने सेठ बलकरण के आदेश का पालन किया फलस्वरूप हनुमान जी ने बलकरण सेठ को माफ कर दिया. सेठ का शरीर जो हनुमान जी की मूर्ति से चिपक गया था वह छूट गया. उसने शपथ लिया कि अब कभी भी लोभ स्वार्थ के कारण गलत कार्य नहीं करेगा.

उपलब्धि इस कहानी से सीख मिलती है कि मनुष्य को जब दुख आता है तो ईश्वर की याद में पूजा अर्चना शुरू कर देता है अर्थात स्वार्थबस ईश्वर से लगाव बढ़ जाता है परंतु जैसे-जैसे दुख दूर होता जाता है सुख आता है हम लोग ईश्वर से दूर होते जाते हैं. जो नहीं होना चाहिए हमें सुख एवं दुख दोनों में तटस्थ रहने की कला होनी चाहिए क्योंकि सुख एवं दुख दोनों ही हमारे लिए उपहार के रूप में ईश्वर प्रदान करता है. ईश्वर का दिया हुआ उपहार कभी भी व्यर्थ नहीं हो सकता है. यह हमें विश्वास करना चाहिए दुख भी हमें बहुत कुछ सिखाता है एवं परिपक्व बनाता है. — **चंद्रभान**

मेमोरी कार्ड एवं ई-सिम

मेमोरी कार्ड आंकड़ों को एकत्र करने वाली एक इलेक्ट्रॉनिक युक्ति है, जिसका प्रयोग मोबाइल फोन, डिजिटल कैमरा, म्यूजिक प्लेयर और वीडियो गेम जैसे कई इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में किया जाता है। इसमें प्रोगाम को एक बार लिखने के बाद मिटाया जा सकता है और पुनः दुबारा लिखा जा सकता है तथा उसमें परिवर्तन भी किया जा सकता है। SD कार्ड का पूरा नाम Secure Digital Card है। इसमें आप डाटा स्टोर कर सकते हैं, रीड कर सकते हैं, राइट कर सकते हैं और डिलीट भी कर सकते हैं।

मेमोरी कार्ड अलग-अलग साइज मिलता है जिसमें तीन तरह के कार्ड पाए जाते हैं (1) Full SD Card

(2) Mini SD Card (3) Micro SD Card। आज के दौर में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाला SD Card Micro SD Card है जो कि आप किसी भी मोबाइल में डाल कर इस्तेमाल कर सकते हैं।

सन् 1990 में बाजारों में उतरा पीसी कार्ड, पहला मेमोरी कार्ड था, जिसका वर्तमान में औद्योगिक रूप में प्रयोग होता है। 1990 में पीसी कार्ड से आकार में छोटे कई दूसरे मेमोरी कार्ड भी आए, जिनमें कॉम्पैक्ट फ्लैश, स्मार्ट मीडिया और मिनी कार्ड थे। वहीं मोबाइल फोन, वीडियो गेम और पीडीए जैसी युक्तियों में एमबेडेड मेमोरी कार्ड का प्रयोग भी होने लगा। 1990 से 2000 के दशक में तक नए तरीके के कई मेमोरी कार्ड आए जिनमें मेमोरी स्टिक, एक्सडी पिक्चर जैसे कार्ड मुख्य थे। इनका आकार छोटा था। वर्तमान कंप्यूटरों, मोबाइल फोन में मेमोरी कार्ड के लिए स्थान (स्लॉट) होता है। कुछ उपकरणों में एक से अधिक मेमोरी कार्ड का भी प्रयोग किया जा सकता है।

वैसे साधारणतया SD कार्ड 3 तरह के होते हैं।

SD:- यह एक यह एक नॉर्मल SD कार्ड है। जिसे SDSC कहा जाता है। और इसका पूरा नाम Secure Digital Standard Capacity है। इसका कार्ड की मैक्सिमम कैपेसिटी 8GB तक होती है। और इसमें डाटा डालने और निकालने की स्पीड बहुत कम होती है। यह आपको मार्केट में बहुत सस्ते दाम में मिल जाएगा। आज से करीबन 3 साल पहले लगभग मार्केट में यही SD कार्ड बेंचे जाते थे। और उसके बाद धीरे-धीरे इनका दाम बहुत कम हो गया है।

SDHC:- SD कार्ड की जरूरत को ध्यान में रखते हुए नॉर्मल SD कार्ड के बाद SDHC का Development हुआ। जिसका पूरा नाम Secure Digital High Capacity है। और इसको 2006 में तैयार किया गया। इसकी मेमोरी 32gb तक है। इसमें आप 32जीबी तक का डाटा स्टोर कर सकते हैं। इसकी स्पीड नॉर्मल SD कार्ड से बहुत ज्यादा है। इसमें आप 25 MB पर सेकंड के हिसाब से डाटा ट्रांसफर कर सकते हैं। आजकल मार्केट में इन की बहुत डिमांड है और लगभग यही SD कार्ड आपको मार्केट में देखने में को मिलेंगे। इन कार्ड का दाम नॉर्मल SD Card से थोड़ा ज्यादा है लेकिन स्पीड को देखते हुए इनकी मार्केट वैल्यू बहुत ज्यादा है।

SDXC:- इस कार्ड का पूरा नाम Secure Digital Extended Capacity है। इसको 2009 में सबसे पहले बनाया गया था। इस कार्ड के स्टोरेज Capacity 32GB से लेकर **2**TB तक है। अभी 2017 में कुछ ऐसे फोन लांच हुए हैं जिनमें आप 2 टीबी तक के माइक्रो एसडी कार्ड चला सकते हैं। लेकिन अभी तक **2**TB का SD कार्ड नहीं बनाया गया है। लेकिन आपको मार्केट में 512 जीबी तक के SD कार्ड आसानी से मिल जाएंगे। 50 MB/S स्पीड से लेकर 312 MB/S तक होती है और इनको अल्ट्रा हाई स्पीड कार्ड भी कहा जाता है।

SD कार्ड की स्पीड का पता लगाने के लिए उनके ऊपर उनकी Class दी हुई होती है। यह उनके स्पीड को दर्शाता है कि आपके कार्ड की स्पीड कितनी है। यहां पर स्पीड का मतलब यह है कि आपका कार्ड कितनी तेजी से डाटा को रीड या राइट कर सकता है।

एसडी कार्ड के स्पीड के अनुसार वर्गीकरण

Class 2 SD Card:- Class 2 SD कार्ड में आप सिर्फ 2 MB पर सेकंड की स्पीड से ही डाटा ट्रांसफर कर सकते हैं। यह बहुत ही स्लो स्पीड कार्ड है।

- Class 4 SD Card:-इसकी डाटा ट्रान्सफर स्पीड 4 MB पर सेकंड की है।
- Class 6 SD Card:- इसकी डाटा ट्रान्सफर स्पीड 6 MB पर सेकंड की है। इस कार्ड में आप HD विडियो रिकॉर्डिंग भी कर सकते हैं।
- Class 10 SD Card:- इसकी डाटा ट्रान्सफर स्पीड 10 MB पर सेकंड की है। इस कार्ड में आप Full HD विडियो रिकॉर्डिंग भी कर सकते हैं।
- UHS Class 1:- इसकी डाटा ट्रान्सफर स्पीड 10 MB पर सेकंड की है। इस कार्ड में आप Full HD विडियो रिकॉर्डिंग के साथ साथ आप इसमे Online Broadcasting भी कर सकते हैं।

UHS Class 3:- इसकी डाटा ट्रान्सफर स्पीड 30 MB पर सेकंड की है। इस कार्ड में आप 2K और 4K विडियो रिकॉर्डिंग कर सकते हैं।

जब SD कार्ड की Capacity ज्यादा होती है या फिर उनकी क्लास ज्यादा होती है तो उनका दाम ज्यादा होता है। तो अब जब भी आप कार्ड खरीदने जाए अपनी रिक्वायरमेंट के हिसाब से कार्ड खरीदे की आपको कितने डाटा ट्रांसफर स्पीड का कार्ड चाहिए और कितनी Capacity का मेमोरी कार्ड चाहिए और कौन से टाइप का आपको कार्ड चाहिए। तो यह बातें आप थोड़ा ध्यान में रखें और उसके बाद आप कोई कार्ड खरीदें।

मोबाइल यूजर्स को अब नया कनेक्शन लेने के लिए सिम खरीदने की जरूरत नहीं पड़ेगी। दूरसंचार विभाग (डॉट) ने इंबेडेड सिम (ई-सिम) के प्रयोग को मंजूरी देने वाले नए दिशानिर्देश जारी कर यह व्यवस्था दी है। नए दिशानिर्देशों के मुताबिक जब भी कोई उपयोगकर्ता अपनी सेवा प्रदाता कंपनी बदलना या नया कनेक्शन लेना चाहेगा, तो उसके स्मार्टफोन या डिवाइस में इंबेडेड सब्सक्राइबर आइडेंटिटी मॉड्यूल यानी ई-सिम डाल दी जाएगी।

उस ई-सिम में उस उपयोगकर्ता द्वारा प्रयोग की जा रही सभी सेवा प्रदाताओं की सूचनाएं अपडेट कर दी जाएंगी। फिलहाल ई-सिम तकनीक का इस्तेमाल रिलांयस जियो और एयरटेल एपल वॉच के जरिए किया जा रहा है।

इसके साथ ही विभाग ने प्रत्येक मोबाइल उपयोगकर्ता को अधिकतम 18 तक सिम का प्रयोग करने की भी इजाजत दे दी है। डॉट ने सिर्फ मोबाइल फोन के लिए नौ सिम के साथ मशीन-टू-मशीन मिलाकर कुल 18 सिम के प्रयोग की इजाजत दी है। यानी की एक यूजर को केवल अधिकतम 18 सिम कार्ड ही इश्यू की जा सकेंगी।

ई-सिम को इंबेडेड सब्सक्राइबर आइडेंटिटी मॉड्यूल कहा जाता है। यह तकनीक सॉफ्टवेयर के जरिए काम करती है। फिलहाल इस तकनीक का इस्तेमाल स्मार्टवॉच में किया जा रहा है। लेकिन इस तकनीक को अब समार्टफोन पर रोल -ऑउट कर दिया जाएगा, जिससे यूजर्स केवल सॉफ्टवेयर के जरिए टेलीकॉम सेवाएं ले सकेंगे। इसके अलावा एक ऑपरेटर से दूसरे ऑपरेटर में स्विच करने में भी आसानी होगी।

ई-सिम तकनीक के जरिए स्मार्टफोन की बैटरी लाइफ बढ़ जाएगी। सॉफ्टवेयर के जरिए काम करने वाले ई-सिम में फिजिकल सिम की अपेक्षा में स्मार्टफोन के बैटरी की खपत कम हो जाएगी। इसके अलावा यूजर्स का सिम पोर्ट करने के लिए 7 दिन का इंतजार नहीं करना पड़ेगा।

इस तकनीक से यूजर्स तुरंत अपने ऑपरेटर बदल सकते हैं। इसके अलावा स्मार्टफोन में सिम कार्ड स्लॉट की भी जरूरत नहीं होगी जिससे आपके स्मार्टफोन में अतिरिक्त जगह भी बन जाएगी। इस तकनीक की शुरुआत 2016 में हो चुकी है। स्मार्टफोन निर्माता कंपनी सैमसंग ने इस तकनीक का इस्तेमाल अपने स्मार्टवॉच सैमसंग गियर 2 में किया था। बाद में इस तकनीक का इस्तेमाल एपल वॉच 3 में किया गया। भारत में रिलायंस जियो और एयरटेल इस तकनीक का इस्तेमाल करने वाली टेलीकॉम आपरेटर है जो एपल वॉच के जरिए ई-सिम की सुविधा दे रही है।

—इन्द्रज्योति राय

कोई नहीं

सीता के राम रखवाले थे
जब हरण हुआ तब कोई नहीं
द्रौपदी के पाँच पति थे
जब चीर हरा तब कोई नहीं

दशरथ के चार दुलारे थे
जब प्राण तजे तब कोई नहीं
रावण भी स्वर्ग विजेता थे
जब लंका जली तब कोई नहीं

श्री कृष्ण सुदर्शनधारी थे
जब तीर चुभा तब कोई नहीं
लक्ष्मण आक्रामक योद्धा थे
जब शक्ति लगी तब कोई नहीं

शरशैय्या पर पड़े पितामह
जब पीड़ा भोगा कोई नहीं
अभिमन्यु राजदुलारे थे
जब फसें व्यूह तब कोई नहीं

सुन लो ऐ दुनिया वालो
सँसार में अपना कोई नहीं
जो लेख लिखा है किस्मत में
उस लेख के आगे कोई नहीं

—चंदन कुमार

पर्यावरण जल जाएगा

नदियों की तो बात ही छोड़ो
सुख कूप भी जाएगा
वर्षा की तो बात ही छोड़ो
ओस भी गिर ना पाएगा

हवा भी इतनी गरम होगी
लू सबको झुलसाएगा
छांव ढूंढोगे दूर-दूर तक
छांव न मिलने पाएगा

लीची जामुन आम बेल सब
नसीब ना हो पाएगा
हाथ मलोगे पछताओगे
वसंत फिर ना आएगा

प्राणों से प्यारा यह सूरज
दुश्मन जग का बन जाएगा
धूप नहीं तब आग बरसेगी
पर्यावरण जल जाएगा

--- प्रमोद कुमार

भूली की परीक्षा

कम हुई है कड़ाई पूर्व की अपेक्षा
असर खो रही है भूली की परीक्षा
भूली की कँपकपी सिहरती आज भी
बदली है सूरत, है बदला मिजाज भी

संगीत सूना-सूना और हुआ साज भी
है पास हुई पिंकी, सफल पीनाज भी
लाचार हुए शिक्षक, लचर हुई शिक्षा।
असर खो रही है भूली की परीक्षा ।।

परीक्षक थे पहले कुछ इस कदर सख्त
सिर घुमाते कापियां होती थीं जब्त
अब घूम- घूम परीक्षार्थी करते हैं वार्ता
है कदाचार पलता परीक्षा के वक्त

परीक्षक पर परीक्षार्थी की चलती है इच्छा।
असर खो रही है ...रुग्ण हुआ देखो परीक्षा का सेल
हिंदी- अंग्रेजी प्रश्नों का तालमेल
अंग्रेजी वाले पास हिंदी वाले फेल

लाज अब बचाए यह भारतीय रेल
प्रवर प्राणप्रिये आज करें पुनरीक्षा।
असर खो रही है भूली की परीक्षा।
असर को रही है भूली की परीक्षा।।

— **उमेश कुमार मोदी**

सफर जिंदगी का

आज फिर नई राह पर
अग्रसर हो रही हूं
मंजिल वही बस
रास्ता बदल रही हूं

जन्म लेकर आयी जब
इस धरा पर
सपने नये और
महफिले सज़ा रही हूं

बचपन की खुशियां
नासमझी और भोलापन
उम्र है वही बस
जिंदगी बदल रही हूं

चाहत वही है अब भी
मंजिल से मिलने की
इरादा वही बस
कर्म बदल रही हूं

पथ पर मिलते रहे
कंकड़ और पत्थर
सबको हटा कर बस
स्वप्न जी रही हूं

यादे कई कुछ
खट्टी कुछ मीठी
बसा कर सबको मन में बस
संघर्ष की कहानी लिख रही हूं

जन्म से मृत्यु के कई रास्ते जाते हैं
जानकर भी मैं मोक्ष ढूंढ़ रही हूं।

— **तनुजा कुमारी**

चित्र विथिका

स्वच्छता पखवाड़ा-2018 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को मंडल रेल प्रबंधक द्वारा पुरस्कृत किए जाने के दृष्य

छायाचित्र

मंडल कार्यालय के भूतल पर राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित राजभाषा संकल्प एवं राजभाषा प्रदर्शनी की कुछ झलकियां

बढ़ते कदम

वर्ष-17
अंक-03
2018-19

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

बढ़ते कदम
वर्ष-17
अंक-03
2018-19
पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी